

कोष्ठगारावतंसकाम् । सुन्यस्तां सुसम्झार्थी प्रमदामिव द्रविणीम् ॥ 10, 1. *befindlich*: न्यस्त एकादशाब्दः *die vor der 11ten befindliche Silbe, die 10te Silbe* ÇAUT. 27. *ausgestellt*: क्रप्यं न्यस्तं क्रपय यत् H. 871. *niedrig, schwach* (vom Ton) RV. PAṬ. 3, 17. — 2) *Jmd oder Etwas* (acc.) *bei Jmd* (loc.) *niederlegen, in Verwahrung geben, anvertrauen, übergeben*: स राज्यं सचिवे न्यस्य MBh. 3, 9922. धनूरत्नम् — न्यासभूतं तदा न्यस्तमस्माकं पूर्वके R. 1, 66, 13. स यदि प्रपद्येत यथान्यस्तं यथाकृतम् M. 6, 183. धनं कुले न्यस्य JĀGṆ. 2, 62. न्यस्ता तेन मन्त्रिषु कोशला RAGH. (ed. Calc.) 1, 35. रामे श्रीन्यस्यताम् 12, 2. मेदेहे न्यस्ता विप्रेण केनचित् । अवात्तिकाभिधा येषा KATHA. 16, 102. भ्रातरि न्यस्य — माम् BHATT. 5, 82. — *caus. nieder-setzen heissen*: गङ्गातीरे — न्यासयामासुरथ तो शिविकाम् MBh. 1, 4948. — *अभिनि niederdrücken*: अभिन्यस्यत्यग्नीडुत्कर्म् KĀTJ. ÇR. 2, 6, 22. Vgl. अभिन्यास.

— उपनि 1) *hinzulegen*: दीप्यमानं ततो वार्द्धं पुष्यैः सत्कृत्य सत्कृतम् । तत्रोपन्यस्य च प्रीतस्तोयोर्मध्ये समेधितम् ॥ R. 4, 4, 17. — 2) *anvertrauen, übergeben*: उपन्यस्य महतीनां विप्रेभ्यः पाण्डवान् MBh. 3, 11551. — 3) *ausführlich darlegen, auseinandersetzen, mit Argumenten begleiten*: भूतमप्यनुपन्यस्तं ह्येते व्यवहारतः *selbst die Thatsache, wenn sie nicht dargelegt wird, verliert im Prozesse* JĀGṆ. 2, 19. यद्यपि गृध्रेण महामन्त्रिणा संधानमुपन्यस्तम् Hit. 120, 5. Vgl. u. समुपनि. किमिदमुपन्यस्तम् *was ist dies für ein Raisonnement (Andeutung?)* ÇĀK. 65, 15. स तु तत्र विशेषदुर्लभः सदुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म यः *welcher den guten Weg des Zu-thuenden darlegt, verkündet* KIR. 2, 3. — Vgl. उपन्यास.

— समुपनि *ausführlich darlegen, mit Argumenten begleiten*: त्वया च — मया समुपन्यस्तेष्वपि मन्त्रेष्वज्ञानं वाक्याहृत्यं च कृतम् Hit. 103, 3. — Vgl. oben u. उपनि 3.

— परिनि *ausstrecken, hinstrecken*: शयनीयपरिन्यस्तगात्र KATHA. 6, 121. — प्रतिनि *für Jeden besonders hinlegen*: तथैवापुधञ्जालानि धातृभ्यां कवचानि च । रथोपस्थे प्रतिन्यस्य सचर्म कठिनं च यत् ॥ R. 2, 40, 16.

— विनि 1) *hier und da hinstellen, auseinanderlegen, vertheilen, ausbreiten*: गुणाश्च सूषशाकाद्यान्ययो दधि घृतं मधु । विन्यसेत्प्रयतः पूर्वं भूमावेव M. 3, 226. (यूयाः) विन्यस्ता विधिवत्सर्वे R. 1, 13, 28. सुसंमृष्टेषु देशेषु विन्यस्तान्मणिवेदिकान् 5, 17, 2. (हाराः) स्तनमध्ये सुविन्यस्ताः 13, 37. (इन्द्रकोषकैः) प्राकारतालविन्यस्तैश्चन्द्रसूर्यशतैरिव 9, 18. विभागविन्यस्तमकार्धरत्नम् (संक्रामनम्) BHATT. 3, 3. नितितलविन्यस्तमौलिमण्डलः PAÑĀT. 230, 18. विन्यस्तवैद्वर्षशिलातले KUMĀRAS. 7, 10. विन्यस्तशुक्लागुरु (अङ्गम्) 15. इतस्ततो विन्यस्तकृञ्जानिदृषदुपल — मुशलम् PRAB. 21, 11. ऽशिलाविन्यस्तभास्वदृशीसंविष्टाः 4. — 2) *niedersetzen, auflegen*: तदर्थमिह विन्यस्ता — शिला R. 2, 96, 6. एकं पादमैकस्मिन्विन्यस्योत्तुण्डाणि संस्थितम् । इतरस्मिंस्तथा चोद्ग्रे वीरासनमुदाकृतम् ॥ VASISHTHA beim Sch. zu KUMĀRAS. 3, 45. स्वोरसि विन्यस्य वक्त्रे तस्य N. 24, 40. शेषान्मासान् — विन्यस्यती भुवि गणनया देहलीमुक्तपुष्पैः MEGH. 85. Uebertr. (seinen Geist, seinen Blick) *auf Jmd oder Etwas richten*: रामे विन्यस्तमानसा R. 2, 60, 7. विन्यस्यतीं दृष्ट्वा तिमिरे पथि GĪTAG. 5, 19. — 3) *hineinstecken*: कर्णालं कृतिपद्मरागशकलं विन्यस्य चक्षुःपुटे AMAR. 13. वक्त्रहारविन्यस्तेतरियाञ्चलः PAÑĀT. 236, 9. — 4) *übergeben*: तव सूनावय विन्यस्य राज्यम् VIKR. 135. सुतविन्यस्तपत्नीकाः JĀGṆ. 3, 45.

— संनि 1) *zusammen niederlegen, zusammenlegen*: यानि मांसानि सं-

कृत्य संन्यासुः ÇAT. Br. 3, 1, 2, 4. तानालुप्य सार्धं संन्यासुः 4, 1, 17. — 2) *niederlegen, ablegen, hinlegen, sinken lassen*: सर्वाणि संन्यस्याभरणानि MBh. 3, 16708. MEGH. 91. तस्य घोषात्संन्यस्ते शयानो शयने R. 5, 14, 29. संन्यस्तभुजद्वयः । स्वप्स्यसि 3, 35, 63. संन्यस्तशस्त्रः RAGH. 2, 59. व्रीडादमुं देवमुद्वीक्ष्य मध्ये संन्यस्तेदेहः स्वयमेव कामः KUMĀRAS. 7, 67. *auflegen*: भारं हि मयि संन्यस्य यातः MBh. 3, 740. संन्यस्त *hingestreckt, hingelagert*: मर्दविन्याससंन्यस्ताः स्वप्नुक्ताः R. 5, 13, 45. अन्ये (वानराः) त्वन्येषु देशेषु संन्यस्ताश्च 6, 16, 46. — 3) *in Verwahrung geben, anvertrauen, übergeben, übertragen*: प्रणिधिभिः — संन्यस्य हिरण्यं तस्य (vermitteltst Jmd in Verwahrung geben) M. 8, 182. मन्त्रिसंन्यस्तकार्यार्थम् R. 4, 28, 5. संन्यस्य त्वयि प्राणान् 5, 66, 10. मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा BHAG. 3, 30. चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य 18, 57. योगसंन्यस्तकर्म्म 4, 41. — 4) *aufgeben, sich von Etwas lossagen*: संन्यस्य सर्वकर्माणि M. 6, 95. 96. सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्य BHAG. 5, 13. ohne obj. *allem irdischen Treiben entsagen und sich ganz dem beschaulichen Leben ergeben*, संन्यासिन् *werden*: दशलक्षणाकं धर्ममनुतिष्ठन्समाहितः । वेदात्तं विधिवच्छ्रुत्वा संन्यसेदन्तो द्विजः ॥ M. 6, 94. संदृश्य लणभङ्गुरं तदखिलं धन्यस्तु संन्यस्यति BHART. 3, 21. संन्यस्तं मया ĀRṢ. Up. in Ind. St. 2, 179.

— निम् 1) *hinauswerfen, wegwerfen, ausstossen, ausreißen*: निरस्तं रत्नं VS. 8, 16. निरस्तः शण्डेः 7, 13, 18. स कौतुषदनादेकं तृणं निरस्यति निरस्तः परावसुरिति ÇAT. Br. 1, 5, 1, 23. 6, 2, 20. 4, 2, 1, 10. ĀÇV. ÇR. 5, 12. KĀTJ. ÇR. 21, 3, 33. 4, 4. 26, 6, 16. रुस्तौ निरस्यति oder *ते er streckt die Hände aus* VOP. 21, 17. 23, 15. सर्व उष्माणो (die Laute श, ष, स und क) ऽग्रस्ता निरस्ता (ÇĀMEAR.: अनिरस्ता अवहिरान्तिताः) विवृता वक्त्रव्याः KHĀND. Up. 2, 22, 5. निरस्तम् (Rede) = त्वर्योदितम् AK. 1, 1, 2, 20. H. 267. निरस्यतु पुमान् शुक्रम् M. 5, 63. SUÇA. 2, 23, 9. (तियधि) निरस्यतं तरंगान् BHATT. 7, 105. बन्धं निरस्यति (abstreifen) oder *ते P. 1, 3, 29, Vārtt. 3, Sch. निरस्त abgeschossen* (Pfeil) H. 779. — 2) *zurückwerfen, abwehren, verjagen, verscheuchen*: अस्या भूमेनिरसितुं भारं भागैः पृथक्पृथक् MBh. 1, 2502. निरस्य रत्नोसि R. 3, 75, 74. 4, 9, 88. भूयश्च शर्वर्षेण निरस्तो ऽकृम् 3, 42, 42. 1, 32, 18. 3, 75, 29. 4, 8, 31. 51. 9, 88. 12, 43. 5, 26, 32. 80, 13. ARG. 9, 18. तस्य (des Liebesfeuers) निरस्यमानकिरणस्य AMAR. 91. रत्नोसि — निरस्यत् BHATT. 1, 12. 2, 36. 15, 35. निराम् रत्नसा वाणान् 14, 23. निराम भङ्गम् 2, 6. अरुणेन तमो निरस्तम् RAGH. 5, 71. निरस्तमुखोदया AMAR. 96. निरस्तापद् DHŪRTAS. 67, 1. 96, 11. — 3) *hinausweisen, verbannen, verstossen*: गृहान्निरस्ता न तेन वैदेहमुता मनस्तः RAGH. 14, 84. यत्तया — मम बान्धवाः । निरस्ताः परिधावन्ति R. 2, 61, 10. 110, 26. 3, 40, 15. 75, 62. 4, 14, 10. DEV. 1, 18. ein Bewerber R. 6, 72, 48. MRĀKH. 115, 25. H. 1474. निरसित R. 4, 13, 45. — 4) *zunichtemachen, vertilgen*: निरस्तपादपे देशे Hit. I, 63. हूलं निरस्य JĀGṆ. 2, 19. निरस्य समयम् MBh. 3, 295. यशोसि सर्वेषुभूतो निरस्यत् BHATT. 1, 3. — 5) *zurückweisen, verwerfen*: अनुकर्तृगतत्वं च निरस्यति SĀH. D. 28, 17.

— परा 1) *wegwerfen, bei Seite werfen*: तत्र पृथिव्यां परास्येनाप्सु ÇAT. Br. 3, 8, 5, 9. नाभिना परास्येत् 8, 7, 2, 16. 3, 3, 2, 8. तत्र परास्यम् 4, 4, 5, 1. — 2) *verstossen, aussetzen* (ein neugeborenes Kind): परा मातीण्डमास्यत् RV. 10, 72, 8. मर्मन्धनं त्वा पुवृत्तिः परासं 4, 18, 8. तस्मात्स्त्रियं ज्ञातो परास्यन्ति न पुमांसम् Nir. 3, 4. — 3) *zurückweisen, verwerfen*: एतेन अनलंकृती पुनः क्षापीती यदुक्तं तदपि परास्तम् SĀH. D. 4, 16, 20.